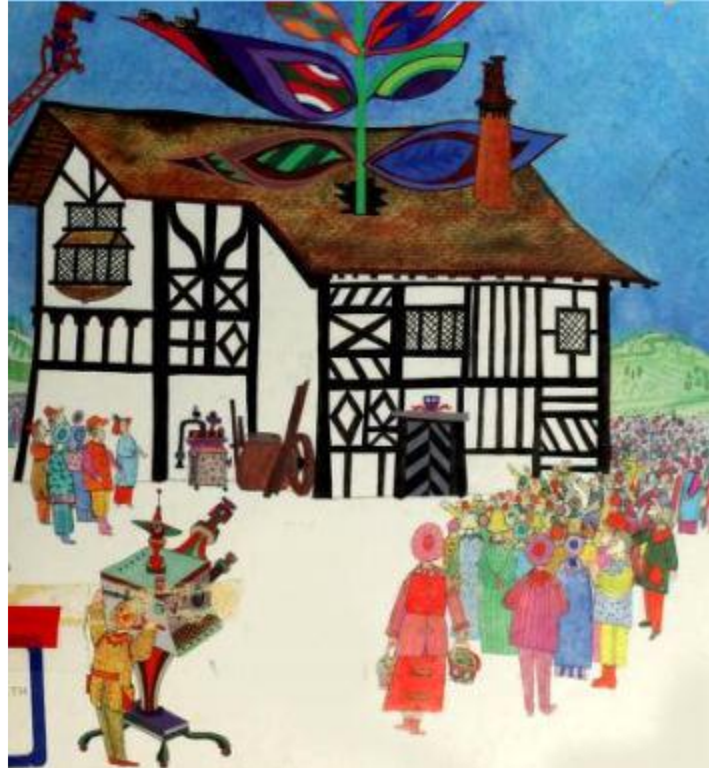
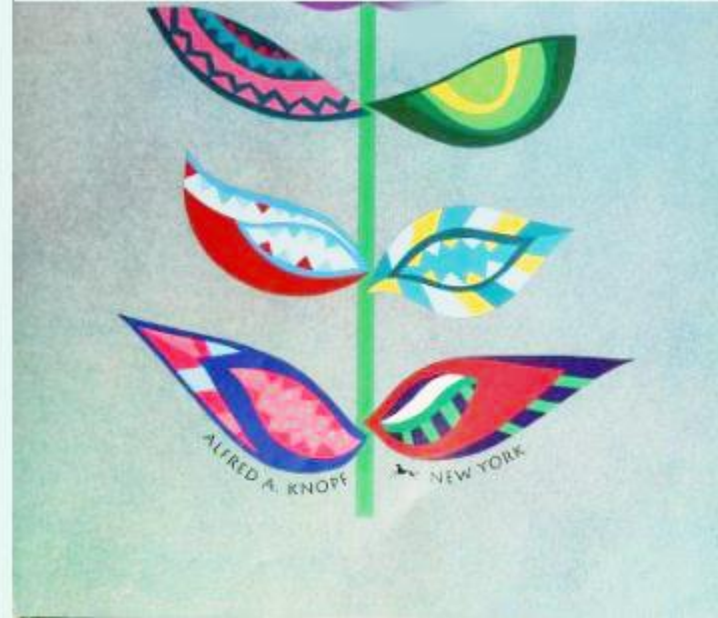
जैक और उनका अनूठा पौधा



जैक और उनका अनूठा पौधा



प्रोफेसर जैक एक वैज्ञानिक थे, लेकिन उनको सबसे प्रिय था अपना बग़ीचा. अपना सारा खाली समय वह सब्ज़ियाँ उगाने में बिताते थे. एक ताज़ा गाजर या पका हुआ टमाटर देख कर जितनी प्रसन्नता उन्हें होती थी उतनी प्रसन्नता किसी और बात से न होती थी.

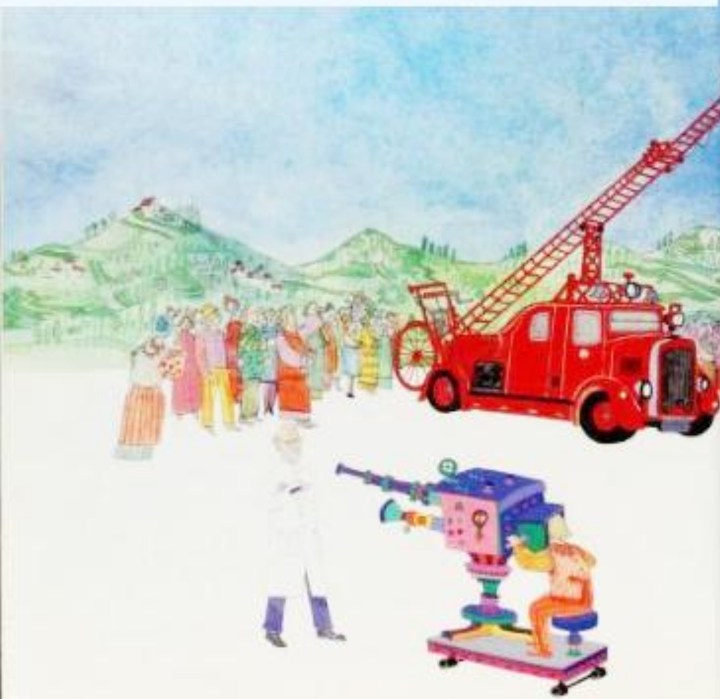
प्रोफेसर जैक एक उतावले व्यक्ति भी थे. जो पौधे जल्दी अंकुरित न होते थे वह उन्हें अच्छे न लगते थे. और इसलिए पौधों को जल्दी बड़े करने का उपाय खोजने का उन्होंने निश्चय किया.

प्रोफेसर जैक अपनी प्रयोगशाला में चले गये और प्रयोग करने लगे. उन्होंने कई रसायनों को मिश्रण बनाया और उस मिश्रण को उन बीजों पर डाला जो वह बगीचे से लेकर आये थे.

यह सोच कर कि उनके पौधे हर माली के लिए ईर्षा का कारण बनेंगे, वह जोर से हंस दिए. "अब देखते हैं कि मेरी सब्ज़ियाँ कितनी तेज़ी से बड़ी होती हैं!" उन्होंने अपने-आप से कहा.



अगले दिन ज़ोर का धमाका सुन कर प्रोफेसर जैक की नींद बहुत सवेरे ही खुल गयी. वह भाग कर बाहर आये. बगीचे में एक विशाल पौधा दिखाई दिया. जितनी कल्पना उन्होंने की थी, उनका प्रयोग उस से भी अधिक सफल हुआ था. शीघ्र ही कई गाँव वाले वहाँ इकट्ठे हो गये और दुपहर होते-होते टीवी के दो चैनलों के दल भी उनका अनूठा पौधा देखने के लिए आ पहुंचे.





जैसे-जैसे पौधा बड़ा होता गया वैसे-वैसे उसके आश्चर्यजनक आकार का समाचार भी फैलता गया. जिसने भी उस पौधे को देखा वह हक्का-बक्का रह गया.

अब तक वह पौधा ओज़ोन परत को पार कर आकाश में बहुत ऊपर चला गया था और उसके हज़ारों पत्ते सूर्य के प्रकाश को रोक रहे थे. दुनिया की अलग-अलग सरकारों ने उस पौधे को मार गिराने के लिए लड़ाकू विमान भेजे. लोग भयभीत हो गये. और फिर भी पौधा बढ़ता गया.





इस बीच पौधे की जड़ें हर तरफ धरती को चीरती हुईं बाहर निकला आईं और यहाँ-वहाँ नगरों को और गाँवों को और हर उस वस्तु को जो उनके रास्ते में आई ध्वस्त करती गईं.

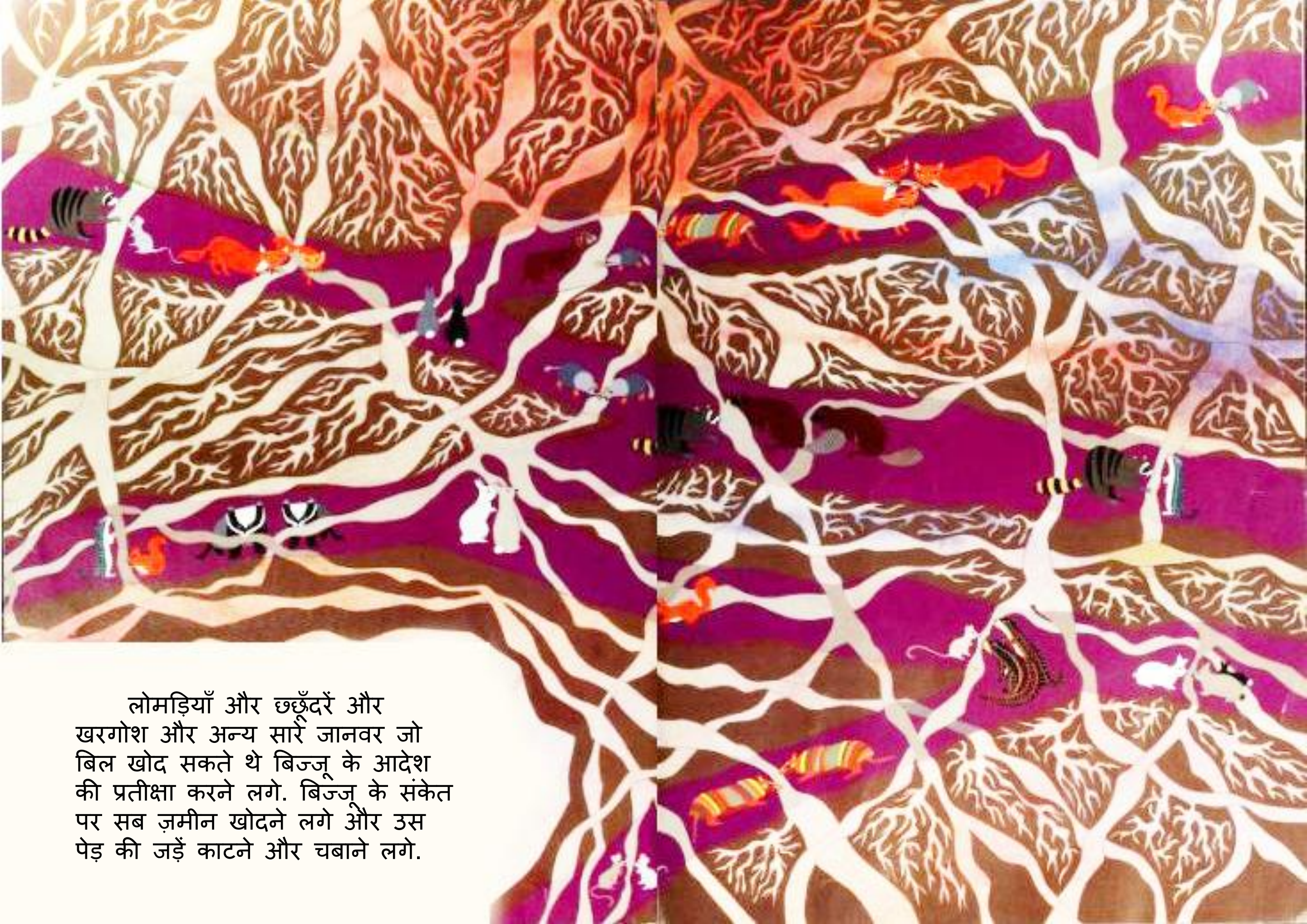
लेकिन सबसे बुरी बात तो अभी होनी बाकी थी. एक उपग्रह ने उस अंतरिक्ष दैत्य की तस्वीर भेजी जो विशाल पौधे के सहारे नीचे धरती की ओर उतर रहा था. अब लोग सच में बहुत डर गये. किसी को समझ न आ रहा था कि क्या किया जाए.



सब पशु भी डरे हुए थे. उनके घर भी नष्ट हो रहे थे. पशुओं को लगा कि शीघ्र ही उनके पास न रहने के लिये कोई जगह होगी और न ही खाने या पीने के लिये कुछ होगा. बिज्जू ने तुरंत एक मीटिंग बुलाई.

"हमें समस्या की जड़ तक जाना होगा," लोमड़ी ने कहा.

"जड़ें! जड़ें ही इस समस्या का समाधान हैं," उल्लू चिल्लाया. "हमें इस विशाल पौधे की जड़ों को काटना होगा और इसे सदा के लिए खत्म कर देना होगा."



लोमड़ियाँ और छछूँदरें और खरगोश और अन्य सारे जानवर जो बिल खोद सकते थे बिज्जू के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे. बिज्जू के संकेत पर सब ज़मीन खोदने लगे और उस पेड़ की जड़ें काटने और चबाने लगे.



बिल खोदने वाले सब जानवर लगातार कई दिन और कई रात उस पौधे की जड़ों को अपने दांतों और पंजों से काटते रहे. आखिरकार विशाल पौधे को जड़ों से आहार मिलना बंद हो गया और वह कमज़ोर हो गया. जब उसकी मृत्यु हुई तो चटक कर उसके कई टुकड़े हो गये, जो दूर अन्तरिक्ष में बिखर गये और अपने साथ दैत्य को भी दूर अन्तरिक्ष में ले गये.

समय बीता, देहात की दशा अच्छी हो गयी. नष्ट हुए नगरों और गाँवों का फिर से निर्माण हुआ. सब लोग और सब पशु फिर से सामान्य जीवन जीने लगे.

प्रोफेसर जैक ने भी अपने घर की मरम्मत की और नया बग़ीचा बनाया. लेकिन इस बार उन्होंने प्रकृति को अपना काम करने दिया.



समाप्त